P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-4* December- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

समतावादी समाज की स्थापना में शिक्षा की भूमिका

Role of Education in Establishment of Egalitarian Society

Paper Submission: 12/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

अमित सोनी
सहायक आचार्य,
शिक्षा विभाग,
आर एम पी जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सीतापुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारत में सनातन काल से शिक्षा और ज्ञान को ग्रहण करना सभी के लिए आवश्यक रहा। एवं तभी उम्र के चार चरणों की स्थापना की गई थी। ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ सन्यास। वेदों से भी हमें या ज्ञान प्राप्त होता है कि 'सा विद्या विमुक्तये' है। अर्थात शिक्षा व्यक्ति को उदार बनाती है विद्या का अर्थ होता है सभी के प्रति विनय शील होना सभी के लिए संवेदनशील होना विद्या व्यक्ति के भीतर विनय को जन्म देती है। और विनय से ही व्यक्ति किसी कार्य को करने का पात्र बनता है। गांधी जी भारतीय शिक्षा को 'द ब्यूटीफुल ट्री' कहा करते थे गांधी जी के द्वारा दिए गए आर्थिक, नैतिक, सांस्कृतिक, नागरिकता का उद्देश्य एक सर्वोदय समाज की स्थापना है। डॉक्टर भीमराव अंबेडकर शिक्षा को अंधविश्वास रूढ़ियों को तोड़ने वाला सबल आधार बताते हैं। आज शिक्षा में चालू बैंकिंग मॉडल के स्थान पर अंतः करण को झकझोरने वाला मॉडल अपनाया जाना अति आवश्यक है। जनतांत्रिक भारत में शिक्षा के माध्यम से देशवासियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना ही प्रमुख लक्ष्य है। शिक्षा प्रत्येक वर्ग के व्यक्तियों को उनकी रूचियों योग्यताओं व शक्तियों को ध्यान में रखते हुए उपलब्ध कराई जानी चाहिए। तभी या व्यवहारिक जीवन की चुनौतियों से निपटने हेतु व्यक्ति को मनोबल प्रदान करेगी।

In India, it has been necessary for everyone to receive education and knowledge from time immemorial. And then four stages of age were established. Brahmacharya householder Vanaprastha Sannyas. We also get knowledge from the Vedas that 'Sa Vidya is liberated'. That is, education makes a person generous. Vidya means being humble towards all and being sensitive to all. Vidya gives rise to humility within a person. And it is only through humility that a person becomes eligible to do something. Gandhiji used to call Indian education 'The Beautiful Tree', the objective of economic, moral, cultural, citizenship given by Gandhiji is the establishment of a Sarvodaya Society. Dr. Bhimrao Ambedkar describes education as a strong foundation for breaking superstition stereotypes. Today, in education, it is necessary to adopt a model that shakes the conscience in place of the current banking model. In democratic India, all-round development of the personality of the countrymen through education is the main goal. Education should be made available to each class of people keeping in mind their interests, abilities and strengths. Only then will the person get the morale to meet the challenges of practical life.

मुख्य शब्द : सनातन शिक्षा, बैंकिंग मॉडल, द ब्यूटीफुल, जनतांत्रिक शिक्षा, समतामूलक समाज।
Sanatan Education, Banking Model, The Beautiful, Democratic Education, Egalitarian Society.

प्रस्तावना

हम सभी के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है इससे हमारा ना केवल ज्ञान पड़ता है वरना हमारे जीवन की गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है। शिक्षा के विषय में आज से ही नहीं अपितु सदियों पहले से लिखा जाता रहा है। और कहा जाता रहा है। शिक्षा की महत्ता को आरंभ से ही समझा गया है।

शिक्षा का अर्थ है– सीखने की ललक व्यक्ति कितना सीख सकता है और क्या सीख सकता है। आधी भारत में सनातन काल से ही शिक्षा और ज्ञान को ग्रहण करना सभी के लिए आवश्यक रहा है। और तभी उम्र के चार चरणों

की स्थापना की गई थी ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ एवं सन्यास प्रथम चरण जन्म से लेकर 25 वर्ष तक का था इसमें शिक्षा की प्रदान की जाती थी।

भारतीय वैदिक काल में शिक्षा का समतावादी स्वरूप परिलक्षित होता है अर्थात् शिक्षा परस्त्री और पुरुष दोनों का ही समान रूप से अधिकार होता था प्राचीन शिक्षा का उद्देश्य मात्र किताबी शिक्षा ना होकर मात्र अक्षर का ज्ञान ना होकर व्यक्ति का सर्वागीण विकास हुआ करता था। शिक्षा का उद्देश्य उसकी ज्ञान ज्योति में वृद्धि करना । उसकी प्रखरता में वृद्धि करना उसके जीवन को ऐसा रूप दे देना जिस पर वह सौभाग्य से इतर आता रहे । शिक्षा का अर्थ था ऐसे समतावादी समाज का निर्माण करना जिससे हर वर्ग एवं लिंग को हर प्रकार की शिक्षा प्राप्त हो।

भारत में प्राचीन काल में शिक्षा को आश्रम व्यवस्था एवं सोलह संस्कारों के साथ जोड़ा गया था उसने संस्कार (जनेऊ धारण) का अर्थ था। शिक्षा को आरंभ करना और उसी संस्कार से ज्ञात होता है कि उस समय समतावादी समाज था क्योंकि बालकों के समान ही बालिकाओं का भी यज्ञोपवित होता था वह भी मेखला धारण करती थी। बालिकाओं को अन्य बातों के साथ ही ललित कलाओं की शिक्षा दी जाती थी जिस प्रकार विवाह से पूर्व बालकों को ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता था उसी प्रकार बालिकाएं भी ब्रह्मचारिणी रहती थी । इसी शिक्षा प्रणाली से हमें गार्गी और अपाला जैसी विदुषी महिलाएं भी प्राप्त होती हैं।

साहित्यावलोकन

शिक्षा समाज की दिशा दिशा दिशा का निर्धारण करती है और कहा जाता है कि अगर किसी देश तथा समाज में बड़े परिवर्तन करने हो तो शिक्षा में समय के साथ परिवर्तन आवश्यक है। भारतीय जनता पार्टी ने 2014 के आम चुनाव में अपना चुनावी वादा शिक्षा नीति में परिवर्तन भी रखा था। जून 2017 में दूसरों के प्रमुख डॉ के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में 11 सदस्य कमेटी का गठन किया गया था जिस ने मई 2019 में शिक्षा नीति में संबंधित प्रारूप तैयार किया। नई शिक्षा नीति 2020 की परामर्श प्रक्रिया विश्व की सबसे बड़ी परामर्श प्रक्रिया रहीयह जनवरी 2019 में 31 अक्टूबर 2019 तक व्यापक स्तर पर सभी पहलुओं को सम्मिलित करते हुए चर्चा की गई तथा सुझाव किए गए।

29 जुलाई 2020 को केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशक ने नई शिक्षा नीति के प्रारूप को पेश किया और बताया कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत की आधुनिक शिक्षा प्राणी के लिए मील का एक पत्थर साबित होगी बारिक केंद्रीय मंत्री तथा प्रवक्ता प्रकाश जावेडकर ने इस नवीन शिक्षा नीति को ऐतिहासिक फैसला बताया एएयसोर्स ऑफ नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 डॉक्टर बी रामास्वामीद्ध

नई शिक्षा नीति 2020 के द्वारा शिक्षा के सभी स्तरों तथा गतिविधियों से संबंधित प्रावधान किए गए शिक्षा नीति का प्रमुख उद्देश्य गुणवत्ता तथा सार्वभौमिक शिक्षा के साथ ही व्यवसायिक शिक्षा पर भी बल दिया गया है।

भारत द्वारा 2015 में अपनाएं क सतत विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य 4 (SDG 4) में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा के अनुसार विश्व में 2030 तक सभी के लिए समावेशी तथा समान गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने का लक्ष्य है। इस तरह के उदास लक्ष्य के लिए संपूर्ण शिक्षा प्रणाली को समर्थन और अधिगम को बढ़ावा देने के लिए पूर्ण गठित करने की आवश्यकता होगी ताकि सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के सभी महत्वपूर्ण लक्ष्य एसडीजी प्राप्त किए जा सकते हैं।12वीं पंचवर्षीय योजना 2012 17 के अनुमान के अनुसार 19.24 आयु वर्ग में आने वाले भारतीय कार्यबल के अत्यंत ही कम प्रतिशत 5: से कम लोगों ने औपचारिक व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त की। जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में 52: जर्मनी में 75: और दक्षिण कोरिया में अत्यंत अधिक 96: पर यह संख्या अधिक है।यह संख्या भारत में व्यवसायिक शिक्षा के प्रसार में तेजी लाने की आवश्यकता को पूरी स्पष्टता से रेखांकित करती है।

शिक्षा का उद्देश्य

आधुनिक भारत का निर्माता गांधी जी और बाबा साहब भीमराव अंबेडकर को माना जाता है उन्होंने भी शिक्षा को जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण माना है गांधीजी ने समानता के लिए सर्वाधिक आवश्यक बताया था। गांधीजी भारतीय शिक्षा को द ब्यूटीफुल ट्री कहा करते थे। इसके पीछे का कारण यह था कि गांधीजी ने भारत की शिक्षा के बारे में जो कुछ पढ़ा था उससे पाया था कि भारत में शिक्षा संस्कारों की बजाय समाज के अधीन थी। वहीं भारतभारत में समानता की लड़ाई लड़ने वाले बाबा साहब भीमराव अंबेडकर भी शिक्षा को समाज में समानता लाने के लिए आवश्यक मानते हैं।

उनका कहना है कि शिक्षा को अंधविश्वास रूढ़ियों को तोड़ने का सफल आधार होना चाहिए ऐसा कारक है जिसमें कम से कम अपने ही बंधुओं के बीच मित्रता समानता सहयोग और सहभागिता के संबंध बन सके और जाति संप्रदाय धन जन्म स्थान आदि के बंधनों का पतन हो सके। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि शिक्षा का प्रमुख संदेश मानव सेवा होना चाहिए।इससे मानव समाज के बीच एकता और संपर्क संबंधों के विकास को बल मिलेगा अंबेडकर जी शिक्षा को इस तरह सरल रूप में रखने के इच्छुक थे कि वही मानवता के बीच प्रेम प्रसारित करने वाली हो। उनका कहना है कि शिक्षा का स्वरूप भ्रामक ना होकर सरल होना चाहिए। या छल प्रपंच का धार ना रखने वाली एवं मानवता के बीच प्रेम प्रसारित करने वाली होनी चाहिए। उन्होंने शिक्षा को मानवीय मूल्यों के साथ जोड़ा है। उनका मत है कि शिक्षा एक दूधारी तलवार की तरह हैं जो व्यक्ति चरित्रहीन व विनय रहित है वह शिक्षित होते हुए भी एक पशु से भी भयावह है।

इसी प्रकार रवीना टैगोर के अनुसार शिक्षा मात्र परीक्षा पास करने के संघ के उद्देश्य पर इतना होकर समाज मेंसमता लाने वाली होनी चाहिए उनका कहना है कि शिक्षा हमेशा अपनी भाषा में दी जानी चाहिए उन्होंने कहा है कि हमारी शिक्षा स्वार्थ पर आधारित परीक्षा पास

कराने के संकरण उद्देश्य पीड़ित यथाशीघ्र नौकरी पाने का माध्यम बन कर रह गई है जो एक कठिन और विदेशी भाषा मे सांझा की जा रही है।

नेल्सन मंडेला शिक्षा के बारे में लिखते हैं कि शिक्षा सबसे गतिशील हथियार है जिसे आप दुनिया को बदलने के लिए उपयोग कर सकते हैं।समाज देश काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन करने की परंपरा रही है और यह परंपरा भविष्य में भी बनी रहेगी क्योंकि शिक्षा ही राष्ट्रीय मूल्य तथा आकांक्षाओं को संभव बनाने में सहायक सिद्ध होती है श्रेष्ठ सबल और योग नागरिकों का निर्माण शिक्षा के माध्यम से ही हो सकता है। इस प्रकार के माध्यम से एक समाजवादी समाज का निर्माण संभव है। अतः शिक्षा और समाज में अटूट संबंध पूर्व में भी रहे हैं और भविष्य में भी वह बने रहेंगे समाज अपने आदर्शों आकांक्षा एवं आवश्कताओं की पूर्ति हेतु भावी नागरिकों के लिए शिक्षा की ऐसी व्यवस्था करता है कि मैं समाज के आदर्शों को प्राप्त करते हुए समाज के लिए उपयोगी नागरिक के रूप में अपने आप को प्रस्तुत कर सके।

प्राचीन भारतीय समाज धार्मिक एवं माध्यमिक था। उस काल में समाज में शिक्षा अंतर ज्योति एवं शक्ति का स्त्रोत मानी जाती थी जो शारीरिक मानसिक बौद्धिक एवं आर्थिक शक्तियों के संतुलित विकास से मनुष्य को श्रेष्ठ बनाती थीमध्यकालीन भारतीय समाज के शासकों के समय मस्जिदों में मकतब और मदरसों के माध्यम से अरबी और फारसी का अध्यापन हुआ करता था।पंडित और ब्राह्मण प्राचीन भारतीय पद्धति से अपने घरों व मंदिरों में बालकों को शिक्षा प्रदान करते। अंग्रेजों ने अंग्रेजी भाषा के माध्यम से केवल उच्च वर्ग विशेष के लिए व्यवस्था की।समता आंदोलन की अवधि में कुछ भारतीय शिक्षाविदों एवं चिंतकों ने राष्ट्र शिक्षा पद्धति को अपनाने के लिए अंग्रेजी हुकूमत पर दबाव बनाए रखा।देश की जनता के पश्चात भारतीय शिक्षा पद्धति में सुधार हेतु शिक्षा आयोगों की स्थापना की गई जिनके द्वारा प्रस्तुत सुझावों के अनुसार शिक्षा व्यवसाय में सुधार के लिए हम आज भी प्रयासरत है देश में पिछले वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त भौतिक उन्नति एवं मानवीय साधनों में वृद्धि की गई परंतु वास्तविकता यह है कि हमारी प्राथमिकता से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की शिक्षा की स्थिति उसकी किस उसकी आदर्श प्रक्रिया तथा स्तर में काफी गिरावट आई है। वर्तमान शिक्षा पद्धति आने कसौटी ऊपर विफल हो रही है। शिक्षित व्यक्तियों के आदर्श एवं मूल्यों में गिरावट आई है। जिसका दुष्प्रभाव राष्ट्र के विश्व और पढ़ना भी स्वभाविक है।शिक्षण संस्थाएं प्रभाव इन विद्यार्थी की बुद्धि को प्रेरित करने तथा आत्मा को झकझोर ने में पूर्णतः असमर्थ हैं।

आते वाली शिक्षा में चालू बैंकिंग मॉडल को बदलकर अंतरण को जोड़ने वाला मॉडल अपनाकर वार्तालाप के माध्यम से अध्ययनरत बालक बालिकाओं में ज्ञान और चेतना के स्तर को ऊंचा उठाया जाना अति आवश्यक है।शिक्षा द्वारा भारतीय समाज के संरचनात्मक पुनरुत्थान हेतु आलोचनात्मक विचारात्मक एवं समस्या समाधान करने की चेतना को बढ़ावा देना वांछित है।वर्तमान भारतीय समाज को व्यवहारिक शिक्षा की आवश्यकता है जो मुक्ति दायिनी सुधारवादी तथा सामाजिक परिवर्तन की सशक्त अभिकर्ता के रूप में भूमिका अदा कर सके भारतीय संविधान में निहित आधार एवं शैक्षिक निहितार्थ के प्रति निष्ठावान बनाने के लिए राष्ट्र के समूह को भरने वाली समस्याओं का दृढ़ता से निदान एवं समाधान करने हेतु प्रत्येक भावी नागरिक को सावधानी से प्रशिक्षित करना आवश्यक है इसके लिए प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक की अध्ययन संस्थाओं में जनतंत्र आधारित समाजवादी समाज समान सामाजिक व्यवस्था सामाजिक न्याय धर्म निरपेक्षता एवं लोक कल्याणकारी राज्य के प्रति मानव को दृष्टि में रखना अपरिहार्य है।ताकि छात्राओं में जनतंत्र के मूलाधार स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व की अभिव्यक्ति का विकास किया जा सके।

निष्कर्ष

जनतांत्रिक भारत में शिक्षा के माध्यम से देशवासियों के व्यक्तित्व का सर्वाधिक विकास करना ही प्रमुख लक्ष्य लोकतांत्रिक भारत की जड़े इसलिए कमजोर परिलक्षित हो रही है क्योंकि यहां के नागरिक शत प्रतिशत शिक्षित नहीं है आता अशिक्षा के अंधकार से छुटकारा पाकर ही हम अपने कलंक को मिटा सकते हैं प्रत्येक भारतीय के शिक्षितहोने से ही त्याग पूर्ण सक्षम नेतृत्व देशभक्ति एवं भावात्मक रूप से एकता के प्रति अभिरुचि का विकास संभव हो सकता है।देशवासियों में जब तक आत्म नियंत्रण सहनशीलता पारस्परिक सद्भाव एवं दूसरों के प्रति आदर की भावना विकसित नहीं होगी तब तक हमारे प्रजातांत्रिक व्यवस्था रूपी पेड़ के पत्ते हरे परिलक्षित जरूर हो सकते हैं परंतु उसकी जड़े कमजोर ही बनी रहेंगी। जहां वास्तविक परिस्थितियों से सरोकार होता है अतः उन्हें वास्तविक मौलिक तत्व को खोजने की प्रेरणादायक शिक्षा अध्यापन अवधि में प्रदान करना आवश्यक है। बिस्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में आ रहे हैं ने दार्शनिक विचारों जो समाज के लिए सिद्ध हो सकते हैं तथा उन्हें भी स्वीकार करने में किसी भी प्रकार का परहेज हमें नहीं करना चाहिए जनतंत्र में व्यावहारिक शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए।समाज में सीखने का पर्यावरण बनाने हेतु हर कहीं अनौपचारिक शिक्षा केंद्र स्थापित किए जाएं तथा अध्ययन के स्थान पर स्वयं अपने प्रयासों से सीखने के लिए वातावरण एवं प्रेरणा का प्रसार हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *लाला रमन बिहारी शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धांत रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ।*
2. *पंचोली डॉक्टर गिरीश बुद्धिमान भारतीय समाज में शिक्षक लयल बुक डिपो मेरठ।*
3. *निबंध संग्रह पीतमपुरा दिल्ली।*
4. *पांडे डॉ राम शकल शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशस्त्र पृष्ठभूमि विनोद पुस्तक मंदिर।*
5. *Pathak P. D. ,Tyagi Gursaran Das , Samasamayik Bharat Aur Sikha , Agrawal Prakashan , Agara , Uttar Pradesh*
6. *Dubey S.K. - Bhartiya Sikha Aur Uski Samasyaen , Radha Prakashan, Agara, Uttar Pradesh.*